भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

जनसंदेश टाइम्स

दिनांक : 17.12.2018

कथाकारों ने उठाए रहस्य के पर्दे, दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

सीता के चरित्र चित्रण को बताया, विज्ञान कथाओं में अवतार की अवधारणा की हुई मनमोहक प्रस्तुति

वाराणसी। आईआईटी बीएचयू के मालवीय उद्यमिता एवं संवर्धन केंद्र में जुटे विज्ञान कथा लेककों ने एक से बढ़कर एक विज्ञान कथाओं की जानकारी दी।

इस दौरान तमिलनाडु से आए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक रहे डा. नेल्लई यस मुथु ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी पारस्परिक सम्बन्धों और संभावनाओं पर चर्चा की। जामिया मिलिया विश्वविद्यालय दिल्ली की शोध छात्रा इन्द्राणी दास गुप्ता ने मिथिकों में सीता के चरित्र-चित्रण के विज्ञान कथात्मक स्वरुप को प्रदर्शित किया। इस सत्र अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा.टीपी दुबे और सारांशक डा. बालाजी आनंद नवाले रहे। सम्मलेन के दूसरे सत्र में रीमा सारवाल और अरविन्द मिश्रा के शोधपत्र विज्ञान कथाओं में अवतार की अवधरणा का प्रस्तुतीकर किया गया जिसमे भारतीय मिथिकों में और आधुनिक विज्ञान कथा की दुनियाँ में अवतार की अवधारणा की तुलनात्मक चर्चा की गयी, महाराष्ट्र से पधारीं सुश्री मीनल काले ने सुप्रसिद्ध विज्ञान कथाकार डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर के मशहूर उपन्यास ह्यावमन की वापसीह्न के कथानक में दिक्काल के अन्तर्सम्बन्धों का जिक्र किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की शोध छात्रा सुश्री कस्तूरी सिन्हा ने नोबेल पुरस्कार विजेता काजुओ इशिगुरो के उपन्यासों की चर्चा की. इस सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध मराठी विज्ञान कथाकार डॉ. वाई. एच. देशपांडे ने की और डॉ. हरीश गोयल एवं राम किशन भिसे द्वारा सञ्चालन किया गया।

फिल्म 'मैट्रीमियन्जिन' विफलता का पैगाम

वाराणसी। आईआईटी बीएचयू में चल रहे दो दिवसीय विज्ञान कथा सम्मलेन के तकनिकी सत्रों में तमिल फिल्म 'मैट्रीमियन्जिन' को प्रदर्शन किया गया। यह फिल्म विज्ञान कथाकारों को कई संदेश दे गयी। जिसकी कहानी एक ऐसे नायक पर केंद्रित है जिसके मस्तिष्क के आपरेशन के उपरांत उसकी यादाश्त चली जाती है, जबकि वैज्ञानिकों को यह आशा थी की उसकी स्मृति और माइंड -पावर बहुत बढ़ जाएगी, फिल्म से यह सीख मिलती है कि, किसी भी अनुसंधान के बुरे पहलुओं को भी नजर अन्दाज नहीं किया जाना चाहिए। तदनन्तर आयोजित सत्रों में अभिषेक कुमार मिश्रा ने विज्ञान कथाओं पर आधारित हिंदी फिल्मों पर रंगीन पारदर्शियों के सहारे चर्चा की और कल्पना कुलश्रेष्ठ ने बच्चों के लिए विज्ञान कथाएं कैसे लिखी जानी चाहिए इसके टिप्स दिए।

मालवीय उद्यमिता एवं संवर्धन केंद्र आईआईटी सत्रहवां विज्ञान कथा सम्मेलन दूसरा दिन

जादू शब्द अथर्व वेद के जातु शब्द से बना

तीसरे सत्र में जादू और विज्ञान कथाओं के सम्बन्ध की जानकारी देते हुए डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय ने बताया कि जादू शब्द अथर्व वेद के जातु शब्द से निकला है जिसमे लोगों को भ्रमित करने का भाव है , जादूगर हरीश गोयल ने लोगो के मन को पढ़ने से संम्बन्धित अनेक जादू केआइटमों का प्रदर्शन कर दर्शकों को चकित कर दिया, उनके कई प्रस्तुतियों को लोगो ने बहुत सराहा।

विज्ञान कथा लेखन पर एआईआर की कार्यशाला

रविवार को सम्मलेन के दूसरे दिन आल इंडिया रेडिओ, बरेली की निदेशक डॉ. मीनू खरे और डा. रजलक्ष्मी बनर्जी ने रेडिओ के लिए विज्ञान कथा लेखन के एक कार्य शिविर का सञ्चालन किया जिसमे सनबीम वरुणा से आये विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया, तदनन्तर आयोजित सत्र में ऋषभ दुबे ने मानव के भविष्य को बेहतर बनाने में विज्ञान कथाओं की भूमिका की चर्चा की और डा. देवराज मौलिक ने उत्तर साम्राज्यवादी दुनिया में विज्ञान कथा के स्वरूपों का वर्णन किया और इसी विषय पर राजस्थान से आयीं डा. अल्पना गुप्ता ने भी प्रकाश डाला, सत्र के अंत में हिंदी विज्ञान कथाओं की ब्लॉगिंग पर पारदर्शियां दिखायीं। भोजनावकाश के उपरांत पैनल-चर्चा में कोरियाई विज्ञान कथाकार सुश्री सुहेयान ली और सुश्री बो यंग किम, डॉ. अरविन्द मिश्रा डॉ. राम किशन भीषे सुश्री अर्चना मिराजकर और अनुपम कुमार ने प्रतिभाग किया जिसका संञ्चालन डा. श्रीनरहरि ने किया, इस चर्चा में भारत में आगामी 2018 में आयोजित होने वाले एशियाई विज्ञान कथा सम्मलेन के विभिन्न पेहलुवों पर चर्चा की गयी।

उपान्यास के प्रभाव की व्याख्या

सम्मलेन के अंत में लेखिका मेरी शैली के सुप्रसिद्ध उपन्यास फ्रैंकेस्टाइन के दो-सौवें वर्ष पर इस उपन्यास के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं पाठकों पर पड़े प्रभावों पर विस्तृत चर्चा करते हुए मेरी शैली को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। मराठी सुप्रसिद्ध विज्ञान कथाकार डा.बालाजी नवाले ने विज्ञान कथा के उद्भव पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो.प्रदीप कुमार मिश्रा ने की, प्रतिभागियों को प्रसस्तिपत्र वितरण के साथ ही इस कर्यक्रम का समापन हुआ।